International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 5,May- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

वाल्मीकि रामायण में सांस्कृतिक चेतना

डॉ रामदत्त मिश्र,
(प्रभारी संस्कृत विभाग,
असिस्टेंट प्रोफेसर,
किशोरी रमण स्नातकोत्तर महाविद्यालय मथुरा।

रामायण हमारे भारतदेश का एक सर्वोत्कृष्ट धार्मिक, नैतिक एवं ऐतिहासिक ग्रंथरत्न है । महर्षि वाल्मीकि द्वारा विरचित यह भारतीय साहित्य का आदि महाकाव्य है। इसमें हिन्दू धर्म एवं संस्कृति के आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के समग्र जीवन का काव्यमय वर्णन हुआ है। इस ग्रंथ में भारतीय संस्कृति का जितना भव्य दिव्य रूप उपलब्ध होता है, उतना अन्यत्र दुर्लभ है। इसमें केवल राम–रावण के युद्ध एवं विजय पराजय का ही वर्णन नहीं है अपितु यह भारतीय राष्ट्रीय एकता का भी आदर्श ग्रंथ है तथा भौगोलिक एकता का भी प्रतीक है। यह मानव जीवन का सर्वाङ्गीण आदर्श प्रस्तुत करने वाला ग्रंथ है। ऐतिहासिक काल के अरुणोदय में रचे जाने पर भी यह ग्रन्थ अनुपम और अद्वितीय है। भारतीय साहित्य के इतिहास में वह शुभदिन चिरस्मरणीय रहेगा जब तमसा नदी के तटपर महर्षि वाल्मीकि के कण्ठ से यह करुणामयी वाग्धारा फूटपड़ी थी।

मा निषाद प्रतिष्ठा त्वमगमः शाश्वतीसमाः।
यत्क्रौञ्च मिथुनादेकमवधीत् काममोहितम्।।[1]

यह ग्रन्थ प्राचीन काल से ही भारतीय साहित्यकोश को भी आलोकित करता रहा है। भारतीय समाज में घर घर में रामचरित्र तथा आदर्श के प्रसार का कार्य इसी रामायण ने किया है। यह आदिकाव्य के रूप में प्रतिष्ठित है। यह भारतीय साहित्य का प्रेरणा स्रोत रहा है। इसने लोगों को आचार विचार व्यवहार एवं संस्कार की दृष्टि से तथा भक्ति एवं भावना की दृ ष्टि से इतना अधिक प्रभावित किया है कि आज यह काव्य से अधिक धर्म ग्रन्थ बन गया है। इसमें अनुपम पाण्डित्य, अद्भुत काव्य कौशल एवं प्रतिभा के साथ ही भारतीय जीवन का सर्वाङ्गीण आदर्शपूर्ण एवं ग्राह्य चित्रण है।

– रामायण ही एक ऐसा महाकाव्य है जिसने भारतीय साहित्य को सर्वाधिक प्रभावित किया है। वेद उपनिषद् के बाद रामायण को अत्यधिक आदर मिलता है। वास्तव में यह पूजनीय ग्रन्थ है। इन्हीं कारणों से इसके महत्व का प्रतिपादन स्वतः सिद्ध है। इस महनीय ग्रन्थ में भारतीयता एवं सांस्कृतिक चेतना के सम्बन्ध में एक श्लोक अत्यन्त प्रसिद्ध है–

वेद वेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे ।
वेदः प्राचेतसादासीत् साक्षात् रामायणात्मना ।।

भाव यह है कि परमात्मा वेद वेद्य है अर्थात् केवल वेदों के द्वारा ही जाना जा सकता है। जब वह परब्रह्म परमेश्वर लोक कल्याण के लिए दशरथनन्दन रघुनन्दन आनन्दकन्द श्रीरामचन्द्र के रूप में अवतीर्ण हुआ, तब वेद भी प्रचेता मुनि के पुत्र महर्षि वाल्मीकि के मुख से श्रीमद्रामायणम' के रूप में अवतीर्ण हुए। वैदिक ज्ञान, संस्कृति, सभ्यता, लोक व्यवहार, अन्तर्मुखता सुखद अनुभूति का एकमात्र आर्षग्रन्थ बाल्मीकि रामायण ही बहुत समय से रहा है और रहेगा। भारत की सांस्कृतिक चेतना इस आदिकाव्य मेंकूट कूट– २ कर भरी हुई है। मन मस्तिष्क को सही दिशा देकर ऋषित्व प्रदान कराने वाला भी यह ग्रन्थ ही है। महर्षि वाल्मीकि ने इस रहस्य का वर्णन अपनी रामायण में बार–बार किया है। मूल रामायण की फलश्रुति में वे कहते हैं––

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 5,May- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

इदं पवित्र पापघ्नं पुण्यं वेदैश्च सम्मितम् ।
पठेत् रामचरितं सर्वपापैः प्रमुच्यत।। [2]

आज भारतीय जनमानस के मन में मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान प्रभु राम के प्रति जो आस्था है तो इसका श्रेय निश्चित तौर पर आदिकवि महर्षि वाल्मीकि को जाता है। इस महनीय ग्रंथ में मानव को महामानव बनाने की विधा की बड़े ही सुव्यवस्थित तरीके से बताया गया है।

वाल्मीकि जी के जीवन के सम्बन्ध में अध्यात्म रामायण, पद्मपुराण, विष्णु पुराण आदि में कई तरह की कथाएँ आती हैं। अद्भुत बात यह है कि इनका पूर्ण जीवन उत्तम कोटि का नहीं बताया गया है। अध्यात्मरामायण में आता है–

अहंपुरा किरातेषु किरातैः सह वर्द्धितः ।
जन्ममात्र द्विजत्वं मे शूद्राचाररतः सदा ॥[3]

इसमें बाल्मीकि जी स्वयं कहते हैं कि पहले मैं जंगल मे रहता था। जंगली लोगों के साथ ही मुझे पढ़ने सीखने का अवसर मिला। वहाँ मैंने बुरे बुरे कार्य किये। मै शूद्र परायण हो गया ब्रह्मसूत्र के शारीरिक भाष्य में शूद्र शब्द की व्याख्या इस प्रकार है– **"शुचा अभिदुद्रुवेइति शूद्रः"** [4] जो बात–बात मे स्वयं दुखी' हो जाय और दूसरों को दुखी कर रुलाये, उसका नाम शूद्र है।

यहां एक बात जानने की है कि एक पुराण में तो यह लिखा है कि वाल्मीकि जी को सप्तर्षि मिले और दूसरे पुराण में लिखा है कि नारद जी मिले। जो भी हो, जब वाल्मीकि जी कमण्डलु आदि को छीनने के लिए सप्तर्षियों अथवा नारदजी के पास पहुँचे तब उन्होंने उनसे पूछा कि तुम जो यह कार्य करने जा रहे हो, इसके फल भागी तुम्हारे घर वाले होंगे या नहीं? जानते हो कि पाप का फल क्या होता है? केवल दुःख होता है। यदि तुम हमारा सामान छीनकर हमें दुख दोगे तो तुम्हें भी दुःख होगा । इसलिए पहले यह देखलो कि तुम जो पाप कर रहे हो और जिसके फलस्वरूप तुम्हें दुःख मिलने वाला है, उसमें तुम्हारे घर वाले हिस्सेदार होंगे या नहीं?

वाल्मीकि जी ने कहा कि मुझे तो यह मालूम नहीं है। मैं घरवालों से पूछकर जवाब दे सकता हूँ। लेकिन में यह बात पूछने जाऊं और तुमइतने में भाग जाओ तो क्या होगा? इसपर सप्त ऋषियों अथवा नारद जी ने कहाकि तुमको जिससे सन्तोष हो वह कर लो लेकिन घर जाकर पूछ जरुर आओ। वाल्मीकि जी ने सप्तर्षियो अथवा नारद जी को पेड़ से बांध दिया। वे खुशी से बंध गये और बंधे बंधे भगवान का संस्मरण करने लगे। वाल्मीकि जी ने घर जाकर अपनी पत्नी, पिता– माता और बन्धु बान्धव सबसे पूछा कि मैं चोरी–डकैती, बेईमानी छलकपट तथा दूसरों को दुःख पहुँचाकर धन– सम्पत्ति ले आता हूँ उससे तुम लोगों का पालन पोषण होता है। लेकिन मुझे इस पापकर्म का जो फल मिलेगा उसमें तुम लोग हिस्से दार बनोगे या नहीं? अब तो घर वालों ने एक स्वर से उत्तरदिया कि नहीं। तुम घर के मालिक हो। तुम्हारा कर्तव्य है कि हमारा पालनपोषण करना। तुम कर्तव्य के अनुसार ही हमारे पालन पोषण के लिए धन कमाकर ले आते हो, लेकिन हम यह नहीं जानते कि तुम कहाँ से कैसे लाते हो, इसलिए यदि तुम्हारे कर्तव्य पालन का फल दुःख है तो हम उसको भोगने में हिस्सेदार नहीं होंगे। यह सुनकर –

वाल्मीकि जी को बड़ी ग्लानि हुई। वे तुरंत सप्तर्षियों अथवा नारद के पास पहुँचे और उनको बन्धन से मुक्त करके बोले कि घरवाले तो दुःख में हिस्सेदार नहीं होंगे। इसके बाद सप्तषियों अथवा नारद जी ने वाल्मीकि जी को समझाया कि

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 5,May- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

देखो, दूसरों को तकलीफ पहुँचाकर धन बटोरना पाप है। फिर जब उस पाप में तुम्हारे परिवार के लोग ही सम्मिलित नहीं हैं तब तुम केवल अपने लिए दुःख की सृष्टि क्यों कर रहे हो? अब तो वाल्मीकि जी सप्तर्षियों अथवा नारद के शरणागत हो गये। उन्होंने उनको राम राम जपनेका आदेश दिया। लेकिन वाल्मीकि जी की स्थिति ऐसी थी कि उनके मुँह से राम नाम निकले ही नहीं।

इसपर नारद जी ने कहा कि अच्छा, तुम सीधे–सीधे राम–राम नहीं जप सकते तो मरा– मरा जपो, क्योंकि मरा–मरा जपने से राम का उच्चारण हो जायेगा। इसी आधार पर गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है कि–– **"उलटा नाम जपत जग जाना । वाल्मीकि भये ब्रह्म समाना।।"** वाल्मीकि जी मरा–मरा जपने लगे और ऐसी तपस्या में संलग्न हुए कि ब्रह्म के समान हो गये। इसीलिए वाल्मीकि रामायण के प्रारम्भ में ही उनके लिए 'तपस्वी' शब्द का प्रयोग करके कहा गया है।.

तपः स्वाध्याय निरतं, तपस्वी वाग्विदां वरम् ।
नारदं परिप्रच्छ वाल्मीकिर्मुनिपुङ्गवम् ॥ [5]

वहीं वाल्मीकि जी जब तपः सिद्ध होकर दुबारा नारद जी से मिले तब उन्होंने यह प्रश्न किया कि महाराज, इस संसार में सबसे गुणवान मनुष्य कौन है?
कोऽस्मिन् साम्प्रतं लोके गुणवान्कश्च वीर्यवान् ।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः ।। [6]

इस पर नारद जी ने उत्तर दिया कि वाल्मीकि जी, ऐसेगुणागार केवल इक्ष्वाकुवंशी श्री रामचन्द्र जी ही हैं और यह बात जनता को जन–जन को मालूम है।

इक्ष्वाकुवंश प्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः ।
नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान् धृतिमान् वशी ।। [7]

वाल्मीकि के प्रश्नों में जो साम्प्रतं और अस्मिन् लोके शब्दों का प्रयोग है, उसका अर्थ
कर्म योग की जो परिभाषा राजर्षियों ने बताई है, उसके अनुसार कर्मयोग सबसे पहले भगवान की ओर से विवस्वान अर्थात् सूर्य में आया सूर्य से मनु में आया और मनु से इक्ष्वाकु में आया ।
इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् ।
विवस्वान् मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रबीत् ।। [8]

सूर्य चन्द्रमा भी लोक कल्याण के लिए निरन्तर गतिशील रहते हैं। **स्वस्ति पन्थामनुचरेम. "सूर्याचन्द्रमसाविव"** इसलिए श्रीरामचन्द्र का इक्ष्वाकु वंश में जन्म लेने का तात्पर्य यह हुआ क्र, कि वे मनुष्य रूप में निरन्तर कर्म निरत हैं, उनके जीवन में कभी विश्राम नहीं है। इसीलिए वाल्मीकि रामायण में उनका वर्णन आदर्श कर्मयोगी के रूप में हुआ। इससे यह आशय भी निकलता है कि श्रीरामचन्द्र केवल त्रेतायुग में ही नहीं हुए आज भी इस धरती पर हैं। उनके गुणों की तन्मात्राएं धरती पर फैली हैं और उनतन्मात्राओं को स्वीकार करके ही मनुष्यों के हृदयों में धर्म–भावनाओं का उदय होता है।

सांस्कृतिक दृष्टि से वाल्मीकि रामायण के प्रमुख पात्रों का पृथ्वी से सम्बन्ध बड़ा ही मनोरम प्रतीत होता है। वाल्मीकि जी क्या है? वाल्मीकि का अर्थ होता है वाँवी । तपस्या करते करते उनके शरीर में लग गये दीमक और दीमकों की मिट्टी से

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 5,May- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उनका शरीर ढक गया। वे केवल अस्थि मात्र शेष रह गये। उनके चाम, रक्त और पीव को दीमक चाट गये। दीमकों से बनाई बांवी से प्रकट होने के कारण उनका नाम वाल्मीकि पड़ा। अर्थ यह है कि वाल्मीकि धरती के, पृथ्वी के पुत्र हैं।

भगवान श्रीराम का पृथ्वी से क्या सम्बन्ध है? राम शब्द का अर्थ होता है **'' रमन्ते अस्मिन् इति।"** भगवानराम प्राणी मात्र के लिए रमण के, विहार के, क्रीड़ा के केन्द्र हैं। उनका चरित्र देवलोक के लिए नहीं,

मानवीय सांस्कृतिक चेतना के केन्द्रविन्दु वाल्मीकि रामायण के श्रीराम भगवान तो हैं ही परन्तु उनको बार बार भगवान् न कहकर मनुष्य रूप में ही वर्णित किया गया है। यह मनुष्य जाति के लिए अत्यन्त कल्याणकारी बात है। माता पिता की आज्ञा का पालन यदि आराम से हो, सुख से हो, अपने नाम के लिए हो तो बहुत से लोग उसे धर्मसमझकर करना चाहते हैं और करने के लिए तैयार रहते हैं परन्तु इस धर्म के प्रति निष्ठा की परिपुष्टि तो तब होती है, जब उसका पालन करने में हमें कष्ट हो और कष्ट को सहनकर भी हम अपने धर्म का पालन करें। कष्टसाध्य धर्म का पालन करने पर ही मनुष्य धर्मात्मा होता है। श्री रामचन्द्र ने राज्यका परित्याग करके चौदह वर्षों तक वनमें निवास किया, वन्य जीवन व्यतीत किया, इसी से पता चलता है कि उनके हृदय में माता पिता की आज्ञा के प्रति कितनी निष्ठा थी।

वाल्मीकि जी कहते हैं कि **'रामोविग्रहवान् धर्मः।** [10] श्रीराममूर्तिमान धर्म हैं, उनके रूप में मानो धर्म ने ही विग्रह धारण कर लिया है। भगवान राम वे हैं, जिनका अपनी इन्द्रियों पर अपने मनपर, जीवनपर नियन्त्रण है। वेदों में जो **''मातृदेवो भव** [11] आदि वचन मिलते हैं, इनका अक्षरशः पालन किया है श्री रामचन्द्र ने ।

वाल्मीकि रामायण में वर्णित श्रीराम में भ्रातृ प्रेम कूट– कूटकर भरा हुआ था। बचपन में श्री राम को कौ"ाल्या सुलाती थीं तो वे अकेले नहीं सोते थे, उनको नींद नहीं आती थी। माता कारण पूछती तो बताते कि लक्ष्मण अभी आये ही नहीं है। फिर जब लक्ष्मण बुलाये जाते तव श्रीराम को नींद आती। इसी तरह उनको स्वादिष्ट भोजन दिया जाता तो वे लक्ष्मण को खिलाये बिना खाते नहीं थे।

नच तेन विना निद्रां लभते पुरुषोत्तमः ।
मृष्टमन्नमुपानीत मश्नाति न हि तं विना ।। [12]

इसी धरती के लिए है। हमारे वैयाकरणों ने रामशब्द का अर्थ : अव्युत्पन्न पक्ष में दशरथ नन्दन कौसल्यानन्दन माना है। अव्युत्पन्न पक्ष का अर्थ है कि उसमे धातु और प्रत्यय मत लगाओ। ऐसे माना कि एक राजा रानी के राजकुमार उत्पन्न हुआ और उस राजकुमार का नाम रखा गया राम। इसलिए वह व्याकरण से उत्पन्न नहीं है, बल्कि लोगों के द्वारा रखा हुआ भगवान का नाम दशरथनन्दन कौसल्यानन्दन का एक नाम है राम। श्रीराम सबको आराम देने वाले हैं। केवल मनुष्य मात्र को ही नहीं प्राणिमात्र को आनन्द देने वाले हैं।

सीता जी क्या है ? पृथिवी से क्या सम्बन्ध है? जब यज्ञ के लिए भूमि शोधन करते समय जनक जी का स्वर्ण–हल–चल रहा था तब उसकी हराई में से जानकी जी निकली। इसलिए वे भी धरती की पुत्री हैं भूमि से ही उनका सम्बन्ध है।

लक्ष्मण जी तो शेषावतार ही हैं, भूमिशायी हैं। वे हमेशा भूमिको धारण करते हैं अपने सिरपर और जब अवतार लेते हैं तो पृथिवी पर ही शयन करते हैं। श्रीरामचन्द्र भली ही शय्या पर शयन करें, लेकिन लक्ष्मण कभी शय्या पर शयन नहीं करते भूमिपर ही शयन करते है। इसलिए भूमि से उनका अभिन्न सम्बन्ध है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 5,May- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

इसी प्रकार हम भरतजी को देखते हैं तो वे भी धरती में गुफा खोदकर रहते हैं। वे इस बात का ध्यान रखते हैं कि मेरे प्रभुराम जिस धरती पर चलते हैं, अपना चरण रखते हैं, उस धरती पर उनके बराबर में कैसे बैठूं, कैसे सोऊं, इसीलिए वे गड्ढा खोदकर रहते हैं।

भगवान राम के पिता दशरथ जी का भी भूमि से विशेष सम्बन्ध हैं।

संस्कृत भाषा में दशरथ का सीधा अर्थ है जिसका रथ दसों दिशाओं में निर्वाध चलता रहता है, जिसके रथ की गति को कोई रोक नहीं सकता है।

दशसु दिक्षु अप्रतिहतो रथोयस्य । अतः दशरथ जी का धरती से सम्बन्ध है।

वाल्मीकि रामायण में सांस्कृतिक चेतना का वैभव प्रेम तत्व है। भ्रातृ प्रेम श्रीरामका लक्ष्मण के प्रति लक्ष्मण जी की श्री राम के प्रति भरतजी का शत्रुहन के प्रति एवं शत्रुहन जी का भरत जी के प्रति तथा आपस में जो प्रेम सौंदर्य परिलक्षित होता है वह अन्यत्र दृष्टिगोचर नहीं होता ।

वाल्मीकि जी कहते हैं कि जब श्री राम घोड़े पर सवार होकर शिकार खेलने जाते तो लक्ष्मण धनुष बाण लेकर उनके पीछे–पीछे उनकी रक्षा के लिए चलते। इसी प्रकार भरतजी को शत्रुघ्न और शत्रुघ्न को भरत जी प्राणाधिक प्रिय थे।

यदाहि हयमारूढ़ो मृगयां याति राघवः ।
अथैनं पृष्ठतोऽभ्येति सधनुः परिपालयन्।।
भरतस्यापि शत्रुघ्नो लक्ष्मणावरजो हि सः।
प्राणैः प्रियतरो नित्यं तस्य चासीत् यथाप्रियः ।। [13]

चित्रकूट वर्णन में रामने प्रकृति के प्रति प्रेम आत्मीयता की स्पष्ट घोषणा की है, ''हे प्रिये । बहु प्रकार के पुरुषों और फलों से परिपूर्ण विविध पक्षियों से युक्त सुन्दर तथा विचित्र शिखरों वाले इस पर्वत में मैं अनुरक्त हो गया हूँ।'' [14]

सांस्कृतिक चेतना के समस्त आदर्शों की एकत्र अन्विति के रूप में अङ्कित राम के चरित्र की लोकप्रियता का प्रमाण यह है कि बौद्धों ने भी श्रीराम को पूर्व जन्म में बुद्ध का ही अवतार सिद्ध करने के लिए दशरथ जातक' की रचना करके उन्हें आदर्श रूप अपनाया है। बौद्धों की भाँति जैन धर्मावलम्बियों ने भी रामकथा अपनायी है। जैन कथा ग्रन्थों में अत्यन्त विस्तृत राम–कथा–साहित्य मिलता है। सुमित्रा माता का प्रेम सौन्दर्य दृष्टव्य है– राम तुम्हारे पिता है, सीता ही तुम्हारी माँ है और वन ही अयोध्या है। इसलिए अबतुम लोग सुखपूर्वक यहाँ से प्रस्थान करो–

रामंदशरथं विद्धि मां विद्धि जनकात्मजाम्।
अयोध्यामटवीं विद्धि गच्छ तात यथा सुखम् ॥ [15]

वाल्मीकि के राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, आदर्शमानव है श्रेष्ठराजा, हैं। यदि कोई एक बार भी उपकार करदेता है तो बे उसको सदा याद रखते थे, कभी भूलते नहीं थे। उनका अपने मन पर इतना निमन्त्रण था कि चाहे कोई सैकड़ों अपराध करे, लेकिन वे एक अपराध को भी याद नहीं रखते थे।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 5,May- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

कदाचिदुपकारेण कृतेनैकेन तुष्यति ।
न स्मरत्यपकाराणां शतमध्यात्मवत्तया,।। [16]

वाल्मीकि रामायण में वर्णित श्री रामभद्र का चरित्र ऐसा है– जो सुख दुःख में, संयोग– वियोग में, जीवन भरण में सब समय सर्वत्र आपको प्रेरणा देने वाला है। श्रीराम का चरित्र भक्तो के लिए, पिता के लिए, भाई के लिए एक आदर्श चरित्र है। अयन शब्द का अर्थ चरित्र भी होता है, अतएव **'' रामस्य अयनं चरित्रं यत्र तत् रामायणम्'' ।**

सांस्कृतिक चेतना से अभिभूत जो संवाद है, वे बड़े आनन्ददायक हैं और हमारे इसी जीवन के लिए उपयोगी है। उनका उपयोग स्वर्ग के लिए नहीं है, नरक से बचने के लिए नहीं है, यहां तक कि मुक्ति के लिए भी नहीं है, और यह बताने के लिए है कि इस सृष्टि में मनुष्य से बढ़कर दूसरी कोई चीज नहीं है– **नहि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चिद्।** [17] "मनुष्य ईश्वर ही नहीं, ईश्वर से भी बढ़कर है। इसीलिए हमारे धर्म ग्रंथो में कहा गया कि मनुष्य को अपना आचरण भगवान् श्रीरामचन्द्र जी की तरह बनाना चाहिए, रावण आदि की तरह नहीं बनाना चाहिए

रामादिवत प्रवर्तितव्यं न रावणादिवत् । [18]

सांस्कृतिक चेतना की दृष्टि से उस वाल्मीकि रामायण में श्री सीताराम जी का चरित्र है, आदर्श है वहसदासर्वदा मानव जाति के सामने बना रहेगा और लोग अनन्तकाल तक यह चाहते रहेंगे कि रामचन्द्र जैसा गुणवान्राजा इस धरती की शोभा बढ़ाता रहे, इसका मंगलानुशासन करता रहे।

।। इत्यलमति विस्तरेण ।

सन्दर्भ ग्रन्थाः–

1. वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड– 01–02–15।
2. वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड– 01–01–98।
3. वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड– 6/65।
4. ब्रह्मसूत्र भा.भाश्य 01.3.34।
5. बा.रा.वा.का. 1.1.1
6. बा.रा.वा.का. 1.2.1
7. बा.रा.वा.का. 1.8.1
8. भग.गीता 4.1.।
9. ऋग्वेद 5.51.15।
10. वा.रामयण अरण्यका. 37.12।
11. तैत्तरीय उप. 1.11.2।
12. वा.रा.वालका. 18.31।
13. वा.रामयण वा.का. 18.32–33।
14. डा.कामिलबुल्के रामकथा पृश्ठ–60।
15. वा.रा.अयो.का. 40.9।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 5,May- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

16. वा.रा.अयो.का. 40.9।
17. महाभारत"ाान्तिपर्व 299/120
18. मम्मट–काव्यप्रका"ा 1.2।